EGCRSS

पाठ-8

भारत का भौतिक स्वरूप

हमारे गाँव या शहर की जमीन कहीं ऊँची, कहीं नीची, कहीं समतल, कहीं टीले आदि रूपों में दिखाई देती है। यह हमारे क्षेत्र का भौतिक स्वरूप है। इसी प्रकार हमारे देश भारत का भौतिक स्वरूप भी विविधतापूर्ण है। कहीं ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं तो कहीं हरे-भरे मैदान, कहीं पठारी भूमि है तो कहीं मरुस्थलीय भूमि, कहीं तटीय मैदान हंै तो कहीं द्वीपसमूह। इन विविधताओं के आधार पर भारत के भौतिक स्वरूप को पाँच भागों में बाँटा गया है-

- उत्तर का पर्वतीय भाग
- उत्तर का मैदानी भाग
- थार का मरुस्थल
- दक्षिण का पठारी भाग
- समुद्र तटीय मैदान एवं द्वीपसमूह

हिमालय की उत्पत्ति :आज से करोड़ों वर्ष पूर्व हिमालय पर्वत की जगह पर **टेथिस महासागर** था। इस विशाल महासागर के उत्तर में अंगारालैण्ड और दक्षिण में गोंडवानालैण्ड नामक दो भू–भाग थे। इन दोनों भू–भागों में बहने वाली नदियों का पानी टेथिस महासागर में गिरता था। पानी के साथ बहकर आया मलबा महासागर की तलहटी में परत दर परत जमा होता गया। पृथ्वी की आन्तरिक हलचल के कारण सागर की तलहटी में जमा हुआ परतदार मलबा, मोड़दार पर्वत के रूप मे ऊपर उठता गया, जिससे विश्व की सबसे ऊँची पर्वत शृंखला **हिमालय** का निर्माण हुआ।

स्वयं करके देखो : *आप एक कागज लो। उसके दो किनारों को दबाते हुए पास लाते जाओ। देखो, बीच में पर्वत की तरह उभार बनता जा रहा है। इसी तरह पृथ्वी के आन्तरिक दबाव के कारण हिमालय पर्वत की उत्पत्ति हुई।*

आइए, इन्हें भारत के प्राकृतिक मानचित्र पर देखते हैं -

1. उत्तर का पर्वतीय भाग

भारत की उत्तरी सीमा पर एक विशाल पर्वत शृंखला है, जो पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से लेकर पूरब में अरुणाचल प्रदेश तक विस्तृत है। पश्चिम में इसकी चैड़ाई अधिक और पूरब में कम है। इसे हिमालय के नाम से जाना जाता है। हिमालय का अर्थ है- हिम$आलय अर्थात बर्फ का घर। उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र को चार समानान्तर श्रेणियों में बाँटा जाता है-

ट्रांस हिमालय (हिमालय-पार) क्षेत्र

यह हिमालय पर्वत के उत्तर में स्थित है। इसमें मुख्यतः कराकोरम, लद्दाख एवं कैलाश पर्वत श्रेणियाँ सम्मिलित हैं। यहाँ का सर्वोच्च पर्वत शिखर कराकोरम श्रेणी पर स्थित के-2 है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 8,611 मीटर है।

हिमाद्रि श्रेणी

यह हिमालय की सबसे उत्तरी पर्वत शृंखला है। इसे वृहद हिमालय या हिमाद्रि कहते हैं। इस शृंखला में विश्व के ऊँचे- ऊँचे शिखर हैं। संसार का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर माउण्ट एवरेस्ट इसी शृंखला

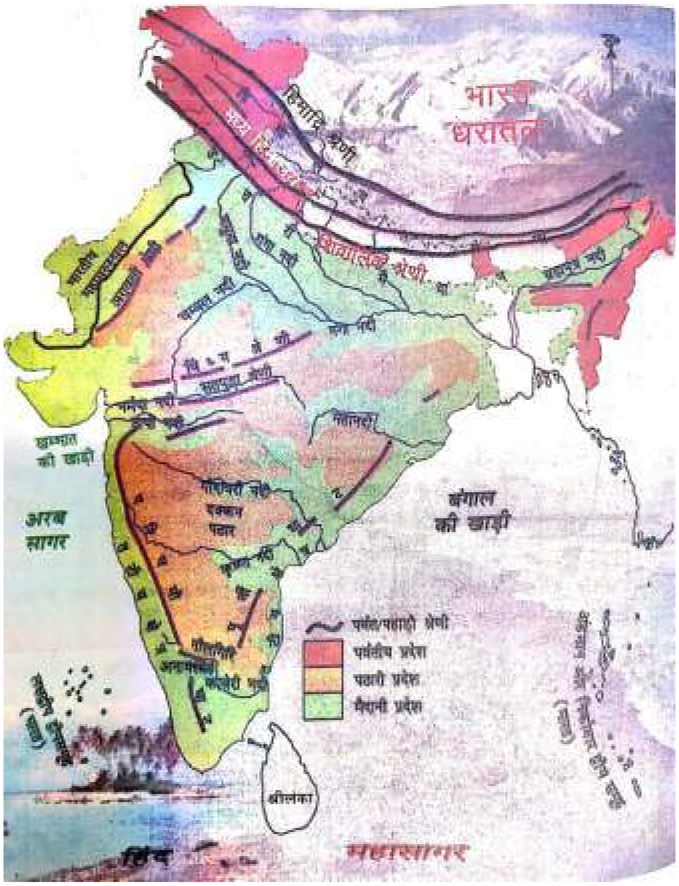

चित्र 8.1 भारत का धरातल

में स्थित है। माउण्ट एवरेस्ट की ऊँचाई समुद्र तल से 8,848 मीटर है। इस शृंखला पर अनेक हिमनद (Glacier) हैं, जिनसे कई नदियाँ निकलती हैं।

हिमाचल श्रेणी

यह हिमाद्रि शृंखला के दक्षिण में स्थित शृंखला है। इसे मध्य हिमालय के नाम से भी जानते हैं। इस शृंखला में श्रीनगर, शिमला, कुल्लू, डलहौजी, नैनीताल, अल्मोड़ा, दार्जिलिंग जैसे अनेक आकर्षक एवं रमणीक पर्यटक स्थल हैं। पश्चिम में हिमाद्रि और हिमाचल शृंखला के बीच कश्मीर की रमणीक घाटी बन गई है। यहाँ की डल झील पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

शिवालिक श्रेणी

यह हिमालय के सबसे दक्षिण में स्थित शृंखला है। इसे उपहिमालय भी कहते हैं। यह कम ऊँचाई की शृंखला है। इस पर घने वन पाए जाते हैं।

सोचो, हिमालय पर्वत से हमें क्या-क्या लाभ हंै ?

- हिमालय पर्वत, भारत के उत्तर में पश्चिम से पूरब दिशा तक एक पहरेदार के रूप में स्थित है। यह वाह्य आक्रमण से भारत की रक्षा करता है।
- यह उत्तर की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को रोककर हमारी जलवायु को शुष्क और ठण्डी होने से बचाता है। साथ ही दक्षिणी मानसून के समय आने वाली मानसूनी हवाओं के मार्ग में बाध्ाा उत्पन्न कर वर्षा कराने में सहायक है।
- विभिन्न रोगों के उपचार के लिए हिमालय पर्वत से हमें अनेक जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती हैं।
- हिमालय पर्वत पर अनेक रमणीक स्थल हैं, जो पर्यटन को बढ़ावा देकर हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं।

2. उत्तर का मैदानी भाग

भाबर एवं तराई- हिमालय से उतरकर मैदान की ओर आने वाली नदियाँ अपने साथ बड़े-बडे, बोल्डर, कंकड़, पत्थर एवं अन्य अवसाद बहाकर लाती हैं। नदी द्वारा शिवालिक के सहारे 8 से 16 किमी की चैड़ाई में इन अवसादों का निक्षेप किया जाता है। इसे भाबर कहते हैं। यहाँ नदियाँ पत्थरों एवं अन्य अवसादों के नीचे विलुप्त हो जाती हैं। आगे ये नदियाँ पुनः धरातल पर दिखाई देती है। भाबर के सहारे एक नम एवं दलदली क्षेत्र का निर्माण होता है। इसे तराई कहते हैं। भाबर एवं तराई क्षेत्र में जैव-विविधता युक्त विस्तृत वन पाये जाते हैं। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान इसी क्षेत्र में स्थित है। भाबर एवं तराई का क्षेत्र आगे जाकर भारत के विशाल मैदान में मिल जाता है।हिमालय के दक्षिण में भारत का विशाल मैदानी भाग स्थित है। यह विश्व का सबसे विस्तृत समतल मैदान है, जो भारत में लगभग 2400 किमी लम्बाई में फैला है।

जलोढ़-मिट्टी: नदियों के द्वारा लाई गई बहुत महीन उपजाऊ मिट्टी ।

चित्र 8.2 उत्तर का मैदान

इसका ढाल पश्चिम से पूरब की ओर है। यह मैदान सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों के द्वारा लायी गयी उपजाऊ जलोढ़ (Allu vial)मिट्टी से बना है। हम नदी-तन्त्र के आधार पर इस मैदानी भाग को तीन हिस्सों में बाँट सकते हैं- सिन्धु नदी-तन्त्र, गंगा नदी-तन्त्र तथा ब्रह्मपुत्र नदी-तन्त्र ।

सिन्धु नदी-तन्त्र की मुख्य नदी सिन्धु और सहायक-नदियाँ ;ज्तपइनजंतपमेद्ध झेलम, चिनाव, सतलज, रावी, ब्यास आदि हैं। यह नदी-तन्त्र जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पंजाब में फैला है। सिन्धु नदी का उद्गम स्थल, तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट है।

गंगा नदी-तन्त्र की मुख्य नदी गंगा और सहायक-नदियाँ यमुना, घाघरा, गण्डक, गोमती, कोसी, आदि हैं। यह नदी-तन्त्र, उत्तरी मैदान के

अधिकांश भाग में फैला है। गंगा नदी का उद्गम स्थल, हिमालय में स्थित गंगोत्री हिमनद ;ळसंबपमतद्ध है।

ब्रह्मपुत्र नदी-तन्त्र की मुख्य नदी ब्रह्मपुत्र और सहायक-नदियाँ लुहित, दिबांग, तिस्ता, आदि हैं। यह नदी-तन्त्र अरुणाचल प्रदेश और असम में विस्तृत है। ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम स्थल भी तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट है।

सोचिए, उत्तर के मैदानी भाग का भारत के लिए क्या महत्व है ?

- नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बने ये मैदान, कृषि के लिए उपजाऊ भूमि प्रदान करते हैं। फलस्वरूप यहाँ कृषि एवं पशुपालन पर आधारित उद्योगों का विकास हुआ है।

- भूमि के समतल होने के कारण यहाँ सड़क व रेल परिवहन का विकास अपेक्षाकृत आसानी से हुआ है।
- नदियों का क्षेत्र होने के कारण उनसे नहरें निकालकर सिंचाई व जल-परिवहन का विकास किया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं ?

- ब्रह्मपुत्र नदी, चीन, भारत और बांग्लादेष में बहती है। इसे चीन में सांगपो और बांग्लादेष में मेघना या जमुना नाम से पुकारा जाता है।
- गंगा नदी को बांग्लादेष में पद्मा नाम से पुकारा जाता है।

3. थार का मरुस्थल

भारत के पश्चिमी भाग में मरुस्थल स्थित है, जिसे 'थार का मरुस्थल' या 'भारतीय महामरुस्थल' कहते हैं। ये भारत के उत्तरी मैदान के दक्षिण-पश्चिम में अरावली पर्वत से लेकर पाकिस्तान की सीमा तक फैला है। यह शुष्क, गर्म तथा रेतीला स्थल है। इसी कारण यहाँ वनस्पति की मात्रा बहुत कम पाई जाती है। यहाँ की मुख्य नदी लूनी है। यहाँ पाई जाने वाली खारे पानी की झील साँभर में नमक का उत्पादन किया जाता है।

चित्र 8.3 मरुस्थल

4. दक्षिण का पठारी भाग

उत्तर के विशाल मैदान तथा तटीय भागों के बीच 'दक्षिण का पठार' या 'प्रायद्वीपीय पठार' स्थित है। यह पठार प्राचीन कठोर, रवेदार चट्टानों से मिलकर बना है। इसकी आकृति त्रिभुजाकार है। इसका धरातल काफी ऊँचा-नीचा है। इस क्षेत्र में कई पहाड़ी शृंखलाएँ तथा घाटियाँ स्थित हैं। यह पठार उत्तर-पश्चिम में अरावली पर्वत, उत्तर में विन्ध्य एवं

सतपुड़ा पर्वत शृंखलाओं तथा दक्षिण में पूर्वी एवं पश्चिमी घाटों से घिरा है। दक्षिण के पठार को हम कई उप विभागों में बाँट सकते हैं। इनमें प्रमुख हैं- मालवा का पठार, छोटा नागपुर पठार और दक्कन का पठार

चित्र 8.3 पठार

मालवा का पठार-दक्षिण के पठार के पश्चिमी भाग में मालवा का पठार स्थित है। यह उत्तर की ओर ढालदार है और अन्ततः उत्तर के मैदानी भाग में मिल जाता है। यमुना नदी की कुछ सहायक नदियों जैसे- चम्बल, बेतवा, आदि का यह उद्गम स्थल इसी पठार पर है।

(धरातल का वह भाग जो पर्वत से नीचे और मैदान से ऊँचा होता है तथा जिसका ऊपरी भाग सपाट हो, ढाल सामान्य हो तथा किनारों का ढाल तीव्र हो , पठार कहलाता है।)

छोटा नागपुर पठार-दक्षिण के पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में छोटा नागपुर पठार स्थित है। यह क्षेत्र लोहा और कोयला जैसे खनिजों से समृद्ध है।

दक्कन का पठार-विन्ध्य एवं सतपुड़ा पर्वत शृंखलाओं के दक्षिण में दक्कन का पठार स्थित है। इसका ढाल पश्चिम से पूरब दिशा की ओर है। यहाँ पर पूरब की ओर बहने वाली अनेक नदियाँ जैसे- महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि हैं, जो बंगाल की खाड़ी में अपने जल का विसर्जन करती हैं। किन्तु नर्मदा और तापी नदियों का बहाव पश्चिम की ओर है और वह अपने जल का विसर्जन अरब सागर में करती हैं।

पष्चिमी घाट (सह्याद्रि) का विस्तार एकसमान है, जबकि पूर्वी घाट बीच-बीच में कटा-छटा है।

सोचिए- भारत के पठारी भाग का क्या महत्व है ?

- दक्षिण के पठार की प्राचीनतम शैलों में अधिकांश खनिज पाए जाते हैं।
- तीव्र ढालयुक्त होने के कारण प्रायद्वीपीय पठार में जल विद्युत उत्पादन केन्द्रों की स्थापना सहज सम्भव है।
- इस पठार में सागौन, चन्दन तथा अन्य बहुमूल्य वृक्ष पाए जाते हैं।
- यहाँ के पर्वत दक्षिण-पश्चिम मानसून को रोककर पश्चिमी तट पर वर्षा में सहायक हैं।

5. तटीय मैदान एवं द्वीपसमूह

पश्चिमी घाट के पश्चिम में तथा पूर्वी घाट के पूरब में तटीय मैदान स्थित हैं। पश्चिम तटीय मैदान सँकरे है, जबकि पूर्वी तटीय मैदान अपेक्षाकृत चैड़े हैं। पश्चिम तटीय मैदान में कोई बड़ी नदी नहीं है, जबकि पूर्वी तटीय मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व डेल्टा(Delta) का निर्माण करती हैं। पूर्वी तटीय मैदान की मुख्य झीलें चिल्का, कोलेरू, पुलीकट, आदि हैं।

चित्र 8.5 तटीय मैदान

भारत के दो द्वीपसमूह हैं- लक्षद्वीप तथा अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह। लक्षद्वीप द्वीपसमूह, अरब सागर में स्थित है। यह मूँगे ;ब्वतंसेद्ध से बने हैं। इस द्वीपसमूह में अनेक छोटे-छोटे द्वीप हैं। अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है। इस द्वीपसमूह के द्वीप अपेक्षाकृत बड़े हैं।

डेल्टा- समुद्र में मिलने से पहले धरातल के कम ढाल एवं नदी के वेग में कमी के कारण नदी का जल कई षाखाओं में बँटकर बहने लगता है। यह त्रिभुजाकार भू-भाग ही डेल्टा कहलाता है। गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियाँ विष्व के सबसे बड़े डेल्टा ‘सुन्दरवन’ का निर्माण करती हैं।

सोचिए, तटीय मैदान और द्वीप समूह से क्या लाभ हैं ?

- पूर्वी तटीय मैदान बहुत उपजाऊ है, जहाँ धान (चावल) की अच्छी उपज होती है।
- पश्चिम तटीय मैदान में मसाले, नारियल तथा रबड़ की खेती की जाती है।
- भारत के व्यापार, पर्यटन एवं सुरक्षा की दृष्टि से द्वीपसमूहों का विशेष महत्व है।

बच्चों को भारत के प्राकृतिक मानचित्र की सहायता से प्रत्येक प्राकृतिक भू-भाग की स्थिति व विषेशता को समझने का पर्याप्त अवसर दें। लवन. जनइम पर इनसे सम्बन्धित वीडियो भी दिखाएँ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए-

(क) उत्तर के मैदानी भाग की विषेशताएँ लिखिए। आपका निवास भारत के किस प्राकृतिक क्षेत्र के अन्तर्गत है ?

(ख) पर्वत और पठार में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

(ग) पठार और मैदानी भाग में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

(घ) द्वीप और प्रायद्वीप में क्या अन्तर है ? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

(ङ) मरुस्थलीय क्षेत्र में वनस्पति कम क्यों पाई जाती है ?

(च) भारत की अर्थव्यवस्था में उत्तर के पर्वतीय भाग का योगदान क्या है ?

2. निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए-

(क) विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर माउण्ट-एवरेस्ट है।
....

(ख) मसूरी, कुल्लू, दार्जिलिंग आदि पर्यटक स्थल शिवालिक श्रेणी में स्थित हैं।
....

(ग) उत्तर के मैदानी भाग का ढाल पूरब से पश्चिम की ओर है।
....

(घ) गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा बनाए गए विश्व के सबसे बड़े डेल्टा का नाम सुन्दरवन है।..

(ङ) लक्षद्वीप, मूँगे से बना द्वीप है।
....
.

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) हिमालय की सबसे दक्षिण में स्थित पर्वत शृंखला को .... कहते हंै।

(ख) गंगा नदी का उद्गम स्थल
.... हिमनद है।

(ग) थार के मरुस्थल की प्रमुख नदी
.... है।

(घ) चम्बल और बेतवा नदियाँ, ... नदी की सहायक नदियाँ है।

(ङ) भारत के दो द्वीपसमूह, ... तथा ....हैं।

भौगोलिक कुशलताएँ-

- भारत के रिक्त मानचित्र पर भारत के विभिन्न प्राकृतिक भागों को प्रदर्शित कीजिए।
- गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा एवं ताप्ती नदियों को भारत के रिक्त मानचित्र पर प्रदर्शित कीजिए।